जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

19 दिसंबर, 2024

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया के ए.पी.डी.यू.एम.टी. और एन.सी.पी.यू.एल. ने संयुक्त रूप से उर्दू भाषा और साहित्य शिक्षण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के अकादेमी ऑफ प्रोफेशनल डेव्लपमेंट ऑफ उर्दू मीडियम टीचर्स (ए.पी.डी.यू.एम.टी.) और राष्ट्रीय उर्दू भाषा संवर्धन परिषद (एन.सी.पी.यू.एल.), नई दिल्ली ने संयुक्त रूप से "प्राथमिक, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर उर्दू भाषा और साहित्य शिक्षण: समस्याएँ और नई शिक्षण पद्धति" शीर्षक से एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र 18 दिसंबर, 2024 को एफ.टी.के.-सी.आई.टी., कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में देश भर के प्रसिद्ध शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, प्रैक्टिसनरों और छात्रों ने उर्दू भाषा शिक्षण-अधिगम और उर्दू माध्यम से शिक्षा के मुद्दों और चिंताओं पर विचार-विमर्श किया। कार्यक्रम में उर्दू को एक भाषा शिक्षण के माध्यम के रूप में बढ़ावा देने के महत्व पर रोशनी डाली गई ।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की शुरुआत संगोष्ठी के आयोजन सचिव डॉ. ए. वाहिद नजीर द्वारा अतिथियों के से स्वागत के साथ हुई। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति प्रो मजहर आसिफ ने की। अपने स्वागत भाषण में एनसीपीयूएल के डॉ. कलीमुल्लाह ने सेमिनार के महत्व पर प्रकाश डाला और मातृभाषा के महत्व पर बल दिया।

सत्र के दौरान अतिथियों के पैनल द्वारा दो महत्वपूर्ण पुस्तकों का विमोचन किया गया। एक पुस्तक का शीर्षक पेशनाम है जिसे डॉ. ए. वाहिद नजीर ने लिखा है और दूसरी पुस्तक का शीर्षक "न्यू ट्रेंड्स इन पेडागॉजी: एनईपी 2020 प्रॉस्पेक्ट्स एंड चैलेंजेस" है, जिसे प्रो जसीम अहमद, प्रो रूही फातिमा, डॉ. एरम खान और डॉ. अंसार अहमद ने संपादित किया है। विमोचन समारोह ने कार्यक्रम में गर्व और उत्सव का एक पल जोड़ा।

अपने संबोधन में जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति प्रो मजहर आसिफ ने भारत की भाषाई विविधता के साथ-साथ सामाजिक-भाषाई जागरूकता और क्रॉस-कल्चरल कम्युनिकेशन का उल्लेख किया।

अकादेमी ऑफ प्रोफेशनल डेव्लपमेंट ऑफ उर्दू मीडियम टीचर्स के निदेशक प्रो जसीम अहमद ने उर्दू भाषा के प्रचार-प्रसार पर ध्यान देने के साथ-साथ छात्रों के जीवन में शिक्षकों की भूमिका पर बल दिया। उन्होंने शिक्षार्थियों की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास की आवश्यकता पर भी बल दिया और यह कहा कि एक अच्छे शिक्षक को एक अच्छा शोधकर्ता भी होना चाहिए।

अपने बीज वक्तव्य में डॉ. मोहम्मद फारुक अंसारी, अध्यक्ष, डीईएल, एनसीईआरटी ने विषय का एक गहन अवलोकन प्रदान किया जिसमें आज के शैक्षणिक और व्यावसायिक परिदृश्य में मातृभाषा की प्रासंगिकता पर जोर दिया गया। शिक्षा संकाय की डीन प्रो. सारा बेगम ने छात्रों के समग्र विकास में भाषा के महत्व का उल्लेख किया। उद्घाटन सत्र का समापन डॉ. हिना आफरीन, सहायक प्रोफेसर, अकादेमी ऑफ प्रोफेशनल डेव्लपमेंट ऑफ उर्दू मीडियम टीचर्स, जेएमआई के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

सेमिनार को पांच तकनीकी सत्रों में बांटा किया गया था जिनमें से प्रत्येक मुख्य विषय के अंतर्गत विभिन्न उप-विषयों को संबोधित करता है । सेमिनार के विषय थे: 1. उर्दू एक विषय के रूप में और स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर उर्दू शिक्षण का माध्यम, 2. उच्च शिक्षा और उर्दू शिक्षण-अधिगम की स्थिति, 3. शिक्षा

में डिजिटलीकरण और कृतिम बुद्धिमत्ता का उपयोग-वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाएँ, और 4. उर्दू माध्यम के छात्रों के लिए कैरियर के अवसर, चुनौतियाँ और उपाय।

सेमिनार में डीयू, जेएनयू, एएमयू, एमएएनयूयू और कई दूसरे विश्वविद्यालयों के जाने-माने विशेषज्ञ मौजूद थे। समानांतर मोड में पाँच तकनीकी सत्रों के दौरान कुल 40 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए, जिसके बाद इंटरैक्टिव चर्चाएँ हुईं।

सेमिनार का समापन एक समापन सत्र के साथ हुआ, जिसमें चर्चाओं का सारांश दिया गया और मुख्य बातों पर प्रकाश डाला गया। इस सत्र की अध्यक्षता जामिया के उर्दू विभाग के प्रो शहजाद अंजुम ने की और प्रो शहपर रसूल ने समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। प्रो रसूल ने अपने संबोधन में उर्दू के साहित्यिक महत्व और शिक्षा के क्षेत्र में इसके महत्व पर चर्चा की। प्रो. शहजाद अंजुम ने उर्दू माध्यम के शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में अकादमी की भूमिका पर बल दिया। सेमिनार की समन्वयक डॉ. हिना आफरीन, सहायक प्रोफेसर, अकादेमी ऑफ प्रोफेशनल डेव्लपमेंट ऑफ उर्दू मीडियम टीचर्स और डॉ. नौशाद आलम, अनुवादक, अकादेमी ऑफ प्रोफेशनल डेव्लपमेंट ऑफ उर्दू मीडियम टीचर्स ने कार्यक्रम को सुचारू रूप से संचालित किया।

विभिन्न विषयों पर सर्वश्रेष्ठ पत्र प्रस्तुति पुरस्कार प्रदान किए गए और प्रस्तुतकर्ताओं को पत्र प्रस्तुति के प्रमाण पत्र वितरित किए गए। सत्र का समापन डॉ. नौशाद आलम द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया